संगीत संस्कार पाठ्यक्रम

व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका

परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -2

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो।

सूचना :- इस वर्ष में स्वर और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है। इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी। लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्णता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों का वाचिक मूल्यांकन श्रेणी के आधार पर होगा। (अ+, अ, ब+, ब)

1. उचित आसन बैठक (संगीत के अभ्यास के लिये सभी स्वरों के साथ ओंकार उच्चारण)
2. स्वर, शुद्ध स्वरों का सुरिला उच्चारण, (साँस, गलत जगह न टूटे इस पर ध्यान देना।)
3. लय - यही स्वर छोटे छोटे स्वर समूह के साथ लयबद्ध गाने का अभ्यास
4. ताल - सरल स्वरावली या शुद्ध स्वरों की सरगम (कहरवा और दादरा ताल में)
5. मुखाकृति – गायन/वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए।
6. गीतों का अभ्यास - संस्कृत श्लोक, बाल गीत, प्राथना गीत, प्रादेशिक गीत, आरती, भजन आदि - भाषा स्पष्ट, उच्चारण शुद्ध हो तथा गीत की लय एवं शब्द के अनुसार भाव प्रदर्शन (Action Song) हो।
7. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
8. सरल छोटे छोटे अलंकार सिखाना | उदा. सा सा, रे रे, ग ग
9. स्वरों के नाम बताना (सा- षड्ज, रे – ऋषभ, ग – गंधार आदि)
10. कहानी, रंग एवँ खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय
11. राष्ट्रगीत – जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वन्दे मातरम्
12. शुद्ध स्वरों का सरगम गीत, राग भूपाली एवं राग दुर्ग - सरगम गीत एवं सरल बंदिश
13. अंको कि सहायता से ताली देकार दादरा एवं कहरवा बोलने का अभ्यास

परीक्षा संगीत संस्कार
तबला – पखावज, भाग -2

उद्देश्य :- विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. उचित आसन
2. बैठक एवं अपने वाद्य पर हाथ का योग्य रखाव |
3. मूल वर्णों का साफ उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं, थुं, न, ट, कत्, घे, घी आदि
4. **लय** - यही वर्ण छोटे छोटे बोल समूह के साथ लयबद्ध बोलने का अभ्यास |
   उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन, घेघेतीट घेघेनाना-केकेतीट केकेनाना, पखावज – धागेतीट तागेतीट, तकतक धुमकिट,

5. **ताल** – तीनताल / आदिताल का परिचय एवं बजाना |
6. **मुखाकृति** – वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए ।
7. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
8. ताल के ठेके बोलना और बजाने का आभ्यास | दादरा, कहरवा, तीनताल/आदिताल
9. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
10. सरल छोटे छोटे बोल समूह | उदा. धाधा तीट ताता तीट, धीट तीट तागे तीट, धाधा तिरकिट ताता तिरकिट आदि |
11. विविध ताल वाद्य पह्चानना | उदा. टाळ (मंजीरा), ढोलक, डफ, संबल आदि |
12. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय | उदा. जैसे की कृष्णलीला एवं होरी पर आधारित गीतों का, किसी महान व्यक्ति की जीवनी पर आधारित गीत जैसे पोवाडा आदि का श्रवण |
13. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |

परीक्षा संगीत संस्कार
कथक (नृत्य) भाग - 2

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. तीन ताल का ठेका हाथ पर ताल देकर पढंत |
2. कोई भी ताल वाद्य के लय के अनुसार पैरों से ताल देना |
3. भक्ति रसपर आधारित किसी भी गीत पर प्रसुतिकरण का प्रयास |
4. भारतीय लोक नृत्य को पह्चानना | (चित्र/विडिओद्वारा)
5. कथक के कोई भी दो कलाकारों का नाम बताना |
6. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
7. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |
8. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत-नृत्य का परिचय |
9. सरल लय में नृत्य के बोल (ता थै थै त्तत्, आ थै थै त्तत्)
10. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
11. प्राकृतिक घटकों का मुद्राओं के माध्यम से परिचय एवं प्रदर्शन | उदा. पशु-पक्षी, नदी, फूल आदि

संगीत संस्कार भाग - 2
भरतनाट्यम् (नृत्य)

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में नृत्य और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. भरतनाट्यम् शैली में खड़े रहने के लिये किये जाने वाले कोई भी पाँच व्यायाम के प्रकार |
   (प्रथम वर्ष के अतिरिक्त)
2. कोई भी ताल वाद्य के लय के अनुसार पैरों से ताल देना |
3. भक्ति रसपर आधारित किसी भी गीत पर प्रसुतिकरण का प्रयास |
4. भारतीय लोक नृत्य को पह्चानना | (चित्र/विडिओद्वारा)
5. भरतनाट्यम् के किन्ही दो कलाकारों का नाम बताना |
6. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
7. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |
8. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत-नृत्य का परिचय |
9. अरमंडी आधी, मंडी पूर्ण करके दिखाना |
10. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय |
    (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
11. प्राकृतिक घटकों का मुद्राओं के माध्यम से परिचय एवं प्रदर्शन | उदा. पशु-पक्षी, नदी, फूल आदि